Govt. Degree College Bhojpur Moradabad

Name, **Madhu Tyagi**, Art Professor History

E.Mail, madhutyagi881@ gmail.com

Stream, Arts

Name of Course, B.A.

Name of Sub, History Paper I, Unit-I History of Modern India

Name of Topic- Advent of Europeans in India

Meta-data- Advent of Europeans in India

Type, PDF Text

घोषणा

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है। आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णतः प्रतिबन्धित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित प्रसारित या साझा नहीं करेंगे ओर इसका व्यक्तित्व ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस ई–कन्टेन्ट में जो जानकारी दो गयी है। वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

ADVENT OF EUROPEANS IN INDIA

Arrival of Portuguese in India

यूरोपीय शक्तियों में पुर्तगाली कंपनी ने भारत में सबसे पहले प्रवेश किया। भारत के लिए नए समुद्री मार्ग की खोज पुर्तगाली व्यापारी वास्कोडिगामा ने 17 मई 1498 को भारत के पश्चिमी तट पर अवस्थित बंदरगाह कालीकट पहुँचकर की। वास्कोडिगामा का स्वागत कालीकट के तत्कालीन शासक जमोरिन (यह उपाधि थी) के द्वारा किया गया। अरब व्यापारियों को जमोरिन का व्यापार पसंद न आने पर विरोध किया गया। पुर्तगीज के भारत आगमन से भारत एवं यूरोप के मध्य एक नए व्यापार का सूत्रपात हुआ। इस व्यापार से वास्कोडिगामा ने करीब 60 गुणा अधिक धन कमाया। भारत में कालीकट, गोवा, दमन दीव एवं हुगली के बंदरगाहों में पुर्तगालियों ने अपनी व्यापारिक कोठियों की स्थापना की। 1500 ई० में भारत में द्वितीय अभियान पेट्रो अल्वरेज कैब्राल द्वारा हुआ। 1502 में वास्कोडिगामा का भारत में पुनः आगमन हुआ। भारत में प्रथम पुर्तगाली फैक्ट्री की स्थापना 1503 ई० में कोचीन में हुई तथा 1505 में पुर्तगीन के प्रथम वायसराय फ्राँसिसकों डी अल्मोड़ा का भारत में आगमन हुआ, जो 1509 तक भारत में रहा। पुर्तगाली सरकार ने उसे यह निर्देश दिया कि वह भारत में ऐसे दुर्ग का निर्माण करे जिसका उद्देश्य सिर्फ सुरक्षा न होकर हिन्द सागर के व्यापार पर पुर्तगाली नियन्त्रण स्थापित करना भी हो। यह नीति नीले या शान्त जल की नीति कहलाई। 1508 में अल्मोड़ा संयुक्त मुस्लिम नौसैनिक बेड़े (मिश्र + तुर्की + गुजरात) के साथ चौल युद्ध में पराजित हुआ। 1509 में अल्मोड़ा ने इसी संयुक्त सेना को पराजित कर पुर्तगालों की स्थिति मजबूत बना दी।

1509 में अल्फांसों द अल्बुकर्क का आगमन हुआ जिसे भारत में पुर्तगीज शक्ति का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। इसने कोचीन में अपना मुख्यालय बनाया। 1510 में अल्बुकर्क ने गोवा को बीजापुर के शासक युसफ आदिलशाह से छीनकर अपने क्षेत्राधिकार में कर लिया। 1511 में दक्षिण–पूर्व–एशिया के मलक्का तथा 1515 में फारान की खाड़ी में अवस्थित हॉरमुज पर अधिकार कर लिया। 1758 में लाली ने फोर्ट सेन्ट डेविड पर नियंत्रण स्थापित कर लिया किन्तु तंजौर पर अधिकार का उसका सपना पूरा नहीं हो पाया। 1760 में अंग्रेजों सर आयर कूट के नेतृत्व में वांडिवाश के युद्ध में फ्राँसीसियों को हरा दिया। 1761 में अंग्रेजों ने पांडिचेरी पर अपना अधिकार कर लिया। तृतीय कर्नाटक युद्ध का अंत सन् 1763 में 'पेरिस की संधि' से हुआ। संधि की शर्तों के अनुसार अंग्रेजों ने चंद्रनगर के अतिरिक्त अन्य सभी फ्रांसीसी प्रदेश जो उस समय उनके नियंत्रण में थे, फ्रांस को वापस कर दिए।

Arrival of British

सभी यूरोपीय कंपनियों में से अंग्रेज सबसे शक्तिशाली थे। 1599 में जॉन मिल्डेनहॉल नामक पहला अंग्रेज भारत आया। 31 दिसम्बर 1600 में इंग्लैंड की तत्कालीन महरानी एलिजाबेथ प्रथम द्वारा ब्रिटिश कम्पनी को भारत से 15 वर्षों तक व्यापार हेतु अधिकार पत्र प्रदान हुआ (समुद्री मार्ग से व्यापार हेतु) 1608 ई० में कैप्टन हॉकिन्स तत्कालीन मुगल शासक जहाँगीर के दरबार में इंग्लैंड का राजदूत बनकर आया। उसने जहाँगीर से सूरत बसाने की गुजारिश की, जहाँगीर ने उसको अनुमति न दे परन्तु उससे खुश होकर 'इलिश

खाँ' की उपाधि प्रदान की। परिणाम स्वरूप अंग्रेजों ने बलपूर्वक 1611 में कैप्टन मिडल्टन द्वारा स्वाली नामक जगह पर पुर्तगालियों के जहाजी बेड़े को हरा कर भगा दिया। परिणाम स्वरूप 1613 में जहाँगीर ने फरमान जारी कर अंग्रेजों को सूरत में स्थायी व्यापारिक कोठी स्थापित करने की आज्ञा दे दी। ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा 1613 में पहला कारखाना सूरत में स्थापित किया गया। पहली व्यापारिक कोठी 1611 में मुसलीपट्टम में खोली गई।

23 जून 1757 में हुए प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजों ने भारत पर पूर्णतः प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। यह युद्ध ब्रिटिश ईस्ट ऑफ इंडिया कम्पनी तथा बंगाल के सिराजुद्दौला के बीच हुआ था।

Arrival of dutch in India

डच हॉलैंड के निवासी थे जो 1596 दमें भारत आए थे। डचों ने 1602 में डच ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना की। डचों ने पुर्तगालियों को पराजित कर कोच्चि में फोर्ट विलियमन का निर्माण किया था। इन्होंने गुजरात, कोरोमंडल, बंगाल और ओड़िशा आदि में अपनी व्यापारिक कोठिया स्थापित की। डचों ने अपनी पहली काठी मुसलीपट्टम में तथा दूसरी पुलीकट में स्थापित की थी। 17वीं शताब्दी म डच व्यापार शक्ति चरम पर थी। डच भारत से सूती वस्त्र, अफीम, रेशम तथा मसालों आदि बहुतओं का व्यापार करते थे। 1759 में अंग्रेजों और डचो के मध्य बेदरा का युद्ध हुआ था जिसमें डचों की बुरी पराजय हुई जिससे उनकी नींव ही उखड़ गई। यही कारण था कि 18वीं शताब्दी में अंग्रेज (ब्रिटिश) के सामने डचों की शक्ति क्षीण हो गयी थी। जिसमें अंग्रेजी सेना का नेतृत्व रार्बट क्लाइव द्वारा किया गया। 22 अक्टूबर 1764 में बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों की जीत हैक्टर मुनरो के नेतृत्व में भारत में ऐसी कोई शक्ति नहीं बची थी जो अंग्रजों को हरा सके।

फ्रांसीसी– 1664 में लुई 14 के शासनकाल में कॉलबर्ट द्वारा 'फ्रेंच ईस्ट इंडिया कम्पनी' की स्थापना हुई। 1668 में फ्रांसीसी कैरो द्वारा औरंगजेब से आज्ञा प्राप्त कर, सूरत में अपनी पहली फैक्ट्री स्थापित की। 1669 में फ्रांसीसियों ने गोलकुण्डा के सुल्तान की स्वीकृति प्राप्त करके मुसलीपट्टनम में अपनी दूसरी व्यापारिक फैक्ट्री स्थापित की। फ्रांसिस मार्टिन ने 1673 में बलिकोंडापुरम में सूबेदार ने एक छोटा गाँव प्राप्त कर पांडिचेरी की नींव रखी। 1774 में बंगाल के सूबेदार ने चन्द्रनगर में कोठी बनाने की आज्ञा दे दी। 1742 में फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले द्वारा फ्रांसीसी और अंग्रेजों में संघर्ष प्रारम्भ हो गया। फलस्वरूप इन दोनों के मध्य तीन युद्ध हुए जिन्हें कर्नाटक युद्ध के नाम से जाना जाता है।

सन्दभ गन्थ स्चो

- एल० पो० शर्मा, आधुनिक भारत (1707–1967 A.D.) पृ० 79 से 89 संस्करण 2018, प्रकाशन लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा
- एस० के पाण्डे, आधुनिक भारत पृ० 1 से 15 संस्करण 2012, प्रयाग एकेडमी पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्री ब्यूटर्स, इलाहाबाद